



19वीं–20वीं शताब्दी में हरियाणा के राजनीतिक मामलों में सनातन धर्म का प्रभाव, परिणाम और समकालीन हरियाणा में इसकी विरासत

मन मोहन शर्मा
पीएच.डी. शोधार्थी,
इतिहास विभाग
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी,
हिसार
ईमेल: mohan.vats2012@gmail.com

शोध मार्गदर्शक:
डॉ. कृष्ण कुमार
सहायक प्रोफेसर एवं शोध मार्गदर्शक
इतिहास विभाग
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी,
हिसार

सारांश:

इस अध्ययन में, उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के दौरान हरियाणा में शक्तिशाली राजनीतिक संगठनों के रूप में आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के विकास के संदर्भ में उनके प्रभाव का विशेष रूप से अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन नृवंशविज्ञान और गुणात्मक विषयवस्तु विश्लेषण विधियों का उपयोग करके यह देखने का प्रयास करता है कि इन आंदोलनों ने विभाजन, हरियाणा में जातिगत राजनीति और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण को कैसे प्रभावित किया। जहाँ दलितों के नेतृत्व वाले डेरा आंदोलन, जैसे डेरा सचखंड बल्लान, समतावाद को बढ़ावा देते हैं और जातिगत पदानुक्रम का विरोध करते हैं, वहीं निष्कर्ष बताते हैं कि आर्य समाज अभी भी जाटों के नेतृत्व वाले हिंदुत्व आख्यानो के माध्यम से प्रभावशाली है। हरियाणा के आधुनिक सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को समझने के लिए अंतःविषय दृष्टिकोण की आवश्यकता है, क्योंकि यह अध्ययन ऐतिहासिक रूप से आधारित उन कारकों को उजागर करता है जो वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं को संचालित करते हैं।

मुख्य शब्द: हिंदुत्व राजनीति, सनातन धर्म, दलित हरियाणा राजनीति, जाति राजनीति हरियाणा, 19वीं सदी का हरियाणा, 19वीं सदी के सांप्रदायिक तनाव, भारत-पाकिस्तान विभाजन, पंजाब-हरियाणा विभाजन

परिचय

उत्तर-पश्चिम भारत में सांस्कृतिक रूप से विविधतापूर्ण एक राज्य, हरियाणा का गठन 1966 में पंजाब से अलग करके किया गया था। 2011 में, इसकी जनसंख्या 2.53 करोड़ थी, जिसमें 87.5% हिंदू, 7% मुस्लिम, 4.9% सिख और 0.6% जैन, बौद्ध या अन्य धर्मों के अनुयायी थे। फरीदाबाद और गुड़गांव में आपको राजसी प्रभाव देखने को मिलेगा महेंद्रगढ़, सिरसा और हिसार में आपको राजस्थानी (बागड़ी) प्रभाव देखने को मिलेगा और करनाल और अंबाला में आपको पंजाबी (सिंह, भारद्वाज) की प्रबल झलक मिलेगी। 19वीं सदी के पंजाब में, जिसमें हरियाणा भी शामिल था, हिंदुओं, मुसलमानों और सिखों (रानी 50–60) के बीच जटिल धार्मिक और जातिगत गतिशीलता के कारण, समूहों के बीच टकराव आम बात थी। 20वीं सदी के हिंदू-केंद्रित सामाजिक और धार्मिक सुधारों ने इन तनावों को और बढ़ा

दिया, जिसके परिणामस्वरूप 1947 में भारत और पाकिस्तान का विभाजन हुआ, अति धार्मिक राजनीतिक दलों का उदय हुआ और पंजाब और हरियाणा का विभाजन हुआ (स्कॉट)।

आर्य समाज और सनातन धर्म सभा से प्रेरित हिंदू राष्ट्रवाद इस संदर्भ में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरा। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ईस्ट इंडिया कंपनी की राजस्व-केंद्रित नीतियों के कारण पूर्वी हरियाणा में आई आर्थिक कठिनाइयों ने 1857 के विद्रोह का मंच तैयार किया। अंग्रेजों द्वारा भागीदारी पर प्रतिबंध लगाने के प्रयासों के बावजूद, हरियाणा राज्य भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक अभिन्न अंग रहा और इसने भारत छोड़ो, सविनय अवज्ञा और असहयोग आंदोलनों में भाग लिया। सुधारवादी हिंदू संगठनों (सिंह) से प्रभावित कई मध्यमवर्गीय नेताओं द्वारा जन-आंदोलन के कारण, इस क्षेत्र ने भारत के उपनिवेश-विरोधी प्रतिरोध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आर्य समाज और सनातन धर्म सभा उन्नीसवीं सदी में हरियाणा में हिंदू सामाजिक और धार्मिक सुधारक थे। यह अध्ययन समाज और राजनीति पर इन सुधारों के प्रभावों की जाँच के लिए ऐतिहासिक विमर्श के गुणात्मक विषयवस्तु विश्लेषण का उपयोग करता है। यह उन तरीकों पर गहराई से विचार करता है जिनसे धार्मिक रूप से प्रेरित सामाजिक और राजनीतिक दृढ़ता ने 1800 के दशक के उत्तरार्ध में नृवंशविज्ञान संबंधी गतिशीलता को प्रेरित किया और 1900 के दशक में स्वतंत्रता से पहले और बाद में यह कैसे आगे बढ़ा। अध्ययन का व्यापक लक्ष्य नृवंशविज्ञान अनुसंधान को ऐतिहासिक सामाजिक-राजनीतिक विश्लेषण के साथ जोड़कर क्षेत्रीय परंपराओं पर प्रकाश डालना है। प्रासंगिक साहित्य की समीक्षा, मुद्दा वक्तव्य, औचित्य, उद्देश्य, शोध प्रश्न, विधियाँ, परिणाम, चर्चा, निष्कर्ष और आगे के अध्ययन के लिए सुझाव इस लेख का संगठनात्मक ढाँचा बनाते हैं।

संबंधित कार्य

यह शोध 19वीं और 20वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासित हरियाणा के इतिहास का गहन अध्ययन करता है और इस बात पर प्रकाश डालता है कि स्थानीय समुदायों, विशेष रूप से हिंदू, मुस्लिम और सिख समुदाय आर्य समाज और सनातन धर्म सभा जैसे समूहों से बदलते हुए सामाजिक और राजनीतिक परिवेश से कैसे प्रभावित हुई। यह साहित्य समीक्षा हरियाणा के सांप्रदायिक राजनीतिक परिवेश को आकार देने वाले सनातन धर्म के आदर्शों, इन समूहों के भीतर समूहों के बीच विभाजन के विकास और स्वतंत्रता से पहले से लेकर आज तक क्षेत्र की राजनीतिक व्यवस्था के इतिहास के बारे में जानकारी एकत्र करती है। इन सबका उद्देश्य हरियाणा की सामाजिक-राजनीतिक संस्कृति पर उन आंदोलनों के स्थायी प्रभाव को उजागर करना है।

19वीं – 20वीं शताब्दी के हरियाणा (तत्कालीन पंजाब प्रांत का भाग) में साम्प्रदायिक राजनीति का विकास, जो सनातन धर्म आधारित आदर्शों/सामाजिक-धार्मिक सुधारों/हिंदू राष्ट्रवाद से प्रभावित/उत्पन्न हुआ।

आर्य समाज (स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा निर्देशित) और सनातन धर्म सभा (श्रद्धा राम और दीन दयालु शर्मा द्वारा संचालित) जैसे हिंदू पुनरुत्थानवादी समूहों ने औपनिवेशिक पंजाब, जिसमें वर्तमान हरियाणा (जोन्स) भी शामिल है, में सांप्रदायिक पहचान और सामाजिक एवं राजनीतिक संगठन पर गहरा प्रभाव डाला। नहरों का उपनिवेशीकरण, व्यावसायीकरण, जनगणना और मुद्रण संस्कृति जैसी ब्रिटिश रणनीतियों, इन प्रसंगों को ब्युंगमिन और कौर ने ब्रिटिश राज का सत्ता में अपनी बढ़त के निदर्शन—रूप दर्शाया। उनके अनुसार इसके फलस्वरूप जनगणों में स्थानीय धार्मिक चेतना सचेत हुई।

जबकि भारद्वाज ने बताया, जब मौलाना इलियास ने 1923 में आर्य समाज के शुद्धि पुनः धर्म परिवर्तन की पहल के जवाब में मुस्लिम तबलीग आंदोलन शुरू किया, तब हिंदू-मुस्लिम तनाव पहले से ही उच्च स्तर पर था। सिंह सभा के माध्यम से सिख प्रतिक्रियाओं के अपने अध्ययन में, टैलबोट और जहूर भाई खान सिंह नाभा के *हम हिंदू नहीं* से रूबरू होते हैं, जो अलग पहचान का दावा करता है। सिद्धू के अनुसार, ओबेरॉय और ग्रेवाल ने समतावादी गुलाबदासी प्रभाव और स्थानीय भाषा के विवादों पर प्रकाश डाला, जबकि गुज्जर, बैलेंटाइन और जहूर ने तत खालसा के बहिष्कारवाद पर प्रकाश डाला, जो स्पष्ट विखंडन और हिंदू वर्चस्व की असुरक्षा के खिलाफ लचीलापन था, जिसने सनातन धर्म के आदर्शों (19वीं और 20वीं सदी के हरियाणा में आर्य समाज और सनातन धर्म सभा) के प्रसार के साथ समाज को प्रभावित किया। सामग्रिक रूप से, ये शैक्षिक आलोचना यह दर्शाते हैं कि स्वतंत्रता के बाद का विभाजन और अवसरवादी जातिवादी सामाजिक-धार्मिक पार्टियों का प्रभाव, उनके राजनीतिक प्रभावों के संदर्भ में, सनातन धर्म आधारित सामाजिक-धार्मिक सुधारों से जुड़ा है। यानी, स्वतंत्रता के बाद के विभाजन और जातिवादी पार्टियों की गतिविधियों ने सनातन धर्म के सामाजिक और धार्मिक सुधारों पर राजनीतिक दृष्टि से असर डाला है। ये अध्ययन इस जुड़ाव को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं।

19वीं-20वीं शताब्दी के हरियाणा में सक्रिय सनातन धर्म आधारित संगठनों के भीतर समूह-आधारित राजनीतिक विभाजन का विकास

उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के आरंभ में पंजाब और हरियाणा में सनातन धर्म के सिद्धांतों के विघटन ने मुख्यतः दो भिन्न सुधारवादी समूहों . आर्य समाज और सनातन धर्म समाज को विकसित किया। कालांतर में ये एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में हिंदुत्व के विकास का मार्ग प्रशस्त किया (जोश)। मेहता (2020) के अनुसार, सांप्रदायिक पहचान निर्माण की प्रक्रिया ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों द्वारा तीव्र हुई, जो धार्मिक जनसांख्यिकी को राजनीतिक प्रतिनिधित्व से जोड़ दिया। ये संघर्ष मुंशी राम विज के जीवन में प्रतिबिम्बित हुए, जो बाद में स्वामी श्रद्धानंद बने। आर्य समाज में उनके आरोहण, पारंपरिक प्रथाओं से विमुख होने और वैदिक एकेश्वरवाद को अपनाने ने ब्राह्मणवादी हठधर्मिता के प्रति उनके असंतोष को प्रदर्शित किया।

मेहता (2020) बताते हैं कि आर्य समाज का शुद्धि अभियान मुसलमानों, ईसाइयों और बहिष्कृतों को समान रूप से पुनः एकीकृत करने के उद्देश्य से पारंपरिक आत्मसातीकरण से काफी हद तक विचलित हो गया था। दूसरी ओर, श्रद्धानंद द्वारा गैर-वैदिक धर्मों को वैदिक वास्तविकता के भ्रष्ट रूप में चित्रित करना समस्याग्रस्त था। सनातन धर्मों इसके

विरोधी थे। उन्होंने पारंपरिक हिंदू धर्म का बचाव किया, लेकिन अपने सिद्धांतों में कम एकजुट थे। जैसा कि लुटगेनडॉर्फ ने बताया है, अधिकतर विद्वानों का ध्यान मुख्यधारा के हिंदू समूहों के व्यापक प्रभाव के बजाय बंगाल और पंजाब के प्रसिद्ध सुधारकों पर केंद्रित रहा है। समग्र रूप से देखा जाए तो, ये प्रक्रियाएँ दर्शाती हैं कि कैसे क्षेत्रीय धार्मिक और राजनीतिक परिदृश्य सुधारवादी उत्साह और रूढ़िवाद के बीच तनाव से आकार लेता था।

यह समयरेखा उत्तर भारत में रूढ़िवादी हिंदू प्रतिक्रियाओं के संस्थागतकरण में महत्वपूर्ण घटनाओं को रेखांकित करती है, जिसका उद्देश्य आर्य समाज (लुटगेनडॉर्फ) के सुधारवादी लक्ष्य के प्रतिकार के रूप में सनातन धर्म के ऐतिहासिक विकास और संगठनात्मक प्रसार को स्पष्ट करना है:

वर्ष	सनातन धर्म संगठन	स्थान	संक्षिप्त विवरण
1873	सनातन धर्म रक्षिणी सभा(शाश्वत धर्म की रक्षा के लिए संघ)	कलकत्ता (कोलकाता)	प्रारंभिक संगठित सनातनी प्रतिक्रियाय आर्य समाज तकनीकों के अनुरूप
लगभग 1873	हिंदू धर्म प्रकाशिक सभा(हिंदू आस्था के प्रचार के लिए सोसायटी)	लुधियाना, पंजाब	सुधारवादी लामबंदी की तरह रूढ़िवादी हिंदू प्रचार
1880 के दशक के अंत में	गंगीय मैदान में संगठित सनातनी गतिविधियों का उदय	गंगा क्षेत्र	सुधारवादी प्रभाव के जवाब में व्यवस्थित रूढ़िवादी लामबंदी
1895	सनातन धर्म समितियों की स्थापना	हरिद्वार और दिल्ली	पारंपरिक हिंदू हितों का संस्थागतकरण
1902	भारत धर्म महामंडल स्थापित	मथुरा	पारंपरिक मान्यताओं के संरक्षण हेतु प्रमुख रूढ़िवादी हिंदू संगठन
1913	अखिल भारतीय हिंदू महासभा बनाया	इलाहाबाद	रूढ़िवादी हिंदू हितों का प्रतिनिधित्व करने वाली राजनीतिक रूप से सक्रिय सनातनी संस्था
1900 के दशक	लगभग 600 स्थानीय सनातनी संगठनों की पहचान की गई	पूरे भारत में	आर्य समाज के संगठनात्मक प्रभाव को दर्शाने वाला व्यापक नेटवर्क

आर्य समाज के शुद्धि आंदोलन का विरोध रूढ़िवादी हिंदुओं के जातीय वर्चस्व खोने के डर और पारंपरिक रीति-रिवाजों में बदलाव के प्रति संशय से उपजा था, जिसके कारण व्यापक स्वीकृति पाने के लिए गंगा पूजन के रीति-रिवाजों को अपनाने जैसे समझौते करने पड़े (मेहता, 2020)। ब्रिटिश भारत के धर्म-आधारित राजनीतिक ढाँचे में, सांप्रदायिक प्रतिस्पर्धा ने हिंदू महासभा के उदय को बढ़ावा दिया। इस विकास ने शुरुआत में पंजाब में शहरी आर्य समाजियों और उत्तर प्रदेश में सनातन धर्मियों जैसे नेताओं के नेतृत्व में सद्भाव को बढ़ावा दिया (सिंह, 2019)। इसने कांग्रेस पार्टी के साथ भी सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे।

वीडी सावरकर के अधीन बने सनातन संगठन ने हिंदुत्व को अपनाया। तत्पश्चात, हिंदू पहचान (काजी) पर जोर देने वाला क्षेत्रीय, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद—जो सांप्रदायिकता और मुस्लिम विरोधी बयानबाजी शुरू हो गई। सावरकर द्वारा

प्रेरित हिंदू राष्ट्रवाद ने हिंदू अंधराष्ट्रवादी और मुस्लिम विरोधी बयानबाजी (सिंह) की विशेषता वाली नीति लागू की। सीमित ग्रामीण अपील के बावजूद, हिंदुत्व कायम रहा और स्वतंत्रता के बाद की राजनीति को प्रभावित किया। जोश द्वारा किए गए शोध भाजपा के नेतृत्व में हुए इसके पुनरुत्थान का उल्लेख करते हैं, जिसकी नीतियां, जैसे नागरिकता संशोधन अधिनियम और राम मंदिर परियोजना, काजी के जातीय और चुनावी लोकतंत्र के दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। इन गतिविधियों से धार्मिक ध्रुवीकरण बढ़ा है। ये घटनाक्रम सनातन धर्म की रूढ़िवादिता से एक राजनीतिक हिंदू राष्ट्रवाद की ओर ध्यान केन्द्रित करता है।

स्वतंत्रता-पूर्व से लेकर समकालीन तिथियों तक हरियाणा की क्षेत्रीय राजनीतिक व्यवस्था का एक संक्षिप्त विवरण (सनातन धर्म आधारित राजनीतिक आदर्शों पर केंद्रित)

बीसवीं सदी में औपनिवेशिक पंजाब में शामिल होने से लेकर आज तक, हरियाणा के सामाजिक-राजनीतिक विकास को सनातन धर्म और आधुनिक हिंदुत्व के साथ-साथ जाति, समुदाय और वंशवादी राजनीति (चौधरी) से प्रभावित बदलते धार्मिक परिदृश्य में देखा जा सकता है। जातिवादी नेतृत्व के राजनीतिक प्रभाव के कारण, उभरती जाति-आधारित राजनीति अक्सर हिंदू राष्ट्रवादी लक्ष्यों को सनातन सिद्धांतों के साथ जोड़ देती है (सिंह, गांगुली, कुमार)। पंडिमकिल (2023) के अनुसार, 2014 के बाद से गोरक्षा में रुचि फिर से बढ़ी है। इसका एक उदाहरण 2015 का हरियाणा गौवंश अधिनियम है, जिसके बारे में कुछ लोगों का कहना है कि यह विभाजन को बढ़ावा देता है और 2002 में झज्जर में हुई लिंगिंग की याद दिलाता है (दास)।

राम और बैक्सास के अनुसार, वंचित समुदायों को सामाजिक सहयोग प्रदान करने वाले नए धार्मिक-राजनीतिक समूह, जैसे डेरा, चुनावों में काफी प्रभाव डालते हैं। जिस तरह जमीन का स्वामित्व सामुदायिक पहचान को आकार देता है (जोशी) और जाट खापों की शक्ति घटती जा रही है (पुष्पा), उसी तरह यह हरित क्रांति के बाद हुए व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को दर्शाता है (जोधका)। हरियाणा में जटिल जाति-समुदाय-राजनीतिक गतिशीलता नए धार्मिक पंथों के प्रसार से और भी जटिल हो गई है, जो रूढ़िवादी जाति पहचान जागरूकता को बढ़ावा दिया है।

समस्या कथन और प्रेरणाएँ

19वीं और 20वीं शताब्दी में औपनिवेशिक पंजाब (हरियाणा सहित) में 19वीं शताब्दी में शुरू हुए सनातन धर्म-उन्मुख आंदोलनों (आर्य समाज, सनातन धर्म सभा) को आधुनिक जातिगत राजनीति, अंतर-सामुदायिक असमानताओं और हिंदुत्व-प्रभावित संघर्षों से जोड़ना साहित्य में एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा करता है। यह उन वैचारिक और संगठनात्मक मार्गों का अनुसरण करता है जिन्होंने हरियाणा के वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक और सांप्रदायिक परिदृश्य को आकार दिया है, जो एक गहन ऐतिहासिक, सामाजिक-राजनीतिक और नृवंशविज्ञान संबंधी जाँच की आवश्यकता से प्रेरित है।

अनुसंधान के उद्देश्य

अपने दायरे और क्षमता के आधार पर अनुसंधान का उद्देश्य निम्नलिखित लक्ष्यों को पूरा करना है:

1. 19वीं शताब्दी के सनातन धर्म आधारित दो सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों, आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के हरियाणा (औपनिवेशिक काल में पंजाब प्रांत में शामिल) में 20वीं शताब्दी के पूर्व-स्वतंत्र भारत में राजनीतिक शक्तियों के रूप में सक्रिय होने के परिवर्तन और प्रभावों की पहचान करना।
2. हरियाणा (औपनिवेशिक काल में पंजाब प्रांत में शामिल) में सक्रिय दो सनातन धर्म आधारित सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों, आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के समकालीन हरियाणा के राजनीतिक मामलों पर राजनीतिक प्रभावों के निशान और विरासत की पहचान करना।

अनुसंधान प्रश्न

इस शोध का उद्देश्य इन प्रश्नों का उत्तर देना है:

1. क्या आर्य समाज और सनातन धर्म सभा की सामाजिक-धार्मिक पहलों की प्रतिक्रियाओं और प्रतिक्रियाओं की व्याख्या स्वतंत्रता-पूर्व पंजाब प्रांत (जिसमें हरियाणा भी एक क्षेत्र के रूप में शामिल है) और हरियाणा राज्य में घटित क्षेत्रीय राजनीतिक घटनाओं/तनावों/विकास के कारकों के रूप में की जा सकती है?
2. हरियाणा (औपनिवेशिक काल में पंजाब प्रांत में शामिल) में सक्रिय दो सनातन धर्म आधारित 19वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों, आर्य समाज और सनातन धर्म सभा की विरासत समकालीन हरियाणा के राजनीतिक मामलों में किस प्रकार प्रदर्शित होती है?

विधियाँ और उपकरण

यह शोध गुणात्मक विषयवस्तु आधारित विश्लेषणात्मक और अनुमानात्मक अध्ययन के रूप में नियोजित और विकसित किया गया है, जहाँ संसाधन, तथ्य, आँकड़े और सहायक आँकड़े द्वितीयक संसाधनों से एकत्रित किए जाते हैं। इस प्रकार, ऐतिहासिक विमर्श का अध्ययन ढाँचा 19वीं-20वीं सदी के हरियाणा के राजनीतिक विकास का एक सामाजिक-राजनीतिक और नृवंशविज्ञान संबंधी ऐतिहासिक निरीक्षण करने के लिए तैयार किया गया है, जो दो प्रमुख सनातन धर्म आधारित आदर्शों – आर्य समाज और सनातन धर्म सभा – से प्रभावित था। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य ऐतिहासिक विरासत अध्ययनों को समर्थन प्रदान करना है, जिन्हें समकालीन घटनाओं को उनके संभावित ऐतिहासिक अतीत से जोड़ने और इस प्रकार उनके पथों, परंपराओं और परिवर्तनों की व्याख्या करने के वैज्ञानिक दृष्टिकोण के रूप में महत्वपूर्ण माना जाता है।

आंकड़ों की सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए, सभी स्रोतों का चयन सरकारी अनुमोदित वेबसाइटों, प्रतिष्ठित समाचार संगठनों, प्रामाणिक ऐतिहासिक प्रकाशनों और समकक्ष-समीक्षित अकादमिक पत्रिकाओं से सावधानीपूर्वक किया जाता है। उन्हें गुणात्मक विश्लेषण पद्धति के माध्यम से संदर्भानुसार फिल्टर, क्रमबद्ध और श्रेणीबद्ध

रूप से व्यवस्थित और विश्लेषित किया जाता है। संसाधनों का श्रेणीबद्ध विश्लेषण नीचे उल्लिखित खंडों में किया गया है:

- 19वीं सदी के हरियाणा के सनातन धर्म आधारित सामाजिक-धार्मिक आदर्शों का 20वीं सदी की राजनीतिक ताकतों में परिवर्तन और उनका प्रभाव
- 19वीं सदी के हरियाणा के सनातन धर्म आधारित सामाजिक-धार्मिक आदर्शों के निशान और विरासत समकालीन हरियाणा के क्षेत्रीय राजनीतिक मामलों में

विश्लेषण की अंतिम व्याख्या एक गहन विश्लेषणात्मक मूल्यांकन और उपयुक्त तर्कों एवं ऐतिहासिक संबंधों के साथ उपर्युक्त दोनों खंडों के अंतर्संबंध को उचित ठहराने के आधार पर प्रस्तुत की गई है। इस दृष्टिकोण के माध्यम से, शोध का उद्देश्य ऐतिहासिक सामाजिक-राजनीतिक और नृवंशविज्ञान संबंधी दृष्टि से क्षेत्रीय रीति-रिवाजों और प्रवृत्तियों की जाँच की भूमिका को रेखांकित करना है ताकि उनकी विरासत और उनके ऐतिहासिक परिणामों को उचित ठहराया जा सके।

साक्ष्यों की अनुसंधान और व्याख्या

19वीं सदी के हरियाणा के सनातन धर्म आधारित सामाजिक-धार्मिक आदर्शों का 20वीं सदी की राजनीतिक शक्तियों में परिवर्तन और उनका प्रभाव

दो सनातन धर्म आधारित सामाजिक-धार्मिक आदर्शों, अर्थात् आर्य समाज और सनातन धर्म सभा, के राजनीतिक शक्तियों के रूप में उभरने के तरीके को स्पष्ट रूप से उजागर करने के लिए, हरियाणा क्षेत्र में भारत की स्वतंत्रता से पूर्व 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान हुए चरण-दर-चरण परिवर्तन का विवरण नीचे दिया गया है:

सिपाही विद्रोह के बाद 19वीं सदी के युग में हरियाणा के सामाजिक-राजनीतिक मामलों में सनातन हिंदू धर्म आधारित आदर्शों का प्रभाव:

औपनिवेशिक शासन और धार्मिक अपमान के खिलाफ विद्रोह, जैसे गाय और सुअर की चर्बी पर कारतूस का मुद्दा, जो सनातन धर्म की शिक्षाओं के खिलाफ था, दोनों को 1857 के सिपाही विद्रोह में व्यक्त किया गया था, विशेष रूप से अंबाला विद्रोह में। विद्रोह के बाद की ब्रिटिश नीतियों ने अशांति को बढ़ा दिया, जिसमें हिंदू कृषि और व्यापारिक समुदायों को सबसे ज्यादा निशाना बनाया गया, जैसे कि व्यवसायों को प्रतिबंधित करना, शिक्षा प्रसार को नजरअंदाज करना और बुनियादी ढांचे की अनदेखी करना। हरियाणा के 23 क्रांतिकारी नेताओं में से कुछ अलग वैचारिक पृष्ठभूमि से थे: उदाहरण के लिए, अंबाला से मुरली धर, गढ़ी सांपला से छोटू राम, रोहतक से दौलत राम गुप्ता और केलंगा से नेकी राम शर्मा। पहले तीन ने आर्य समाज सुधारवाद को उपनिवेशवाद विरोधी सक्रियता में लाया, आर्य समाज की महिला कार्यकर्ताओं ने ग्रामीण शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ावा देकर प्रतिरोध आंदोलन में एक लैंगिक दृष्टिकोण

लाया। अंग्रेजों द्वारा पारित पंजाब अलगाव अधिनियम (1900) और पंजाब पूर्वग्रहण अधिनियम (1905) ने पहले से मौजूद हिंदू-मुस्लिम विभाजन को और बढ़ा दिया। अंततः, सनातन धर्म ने उपनिवेशवाद के विरुद्ध एक एकीकृत शक्ति के रूप में कार्य किया और साथ ही सामाजिक स्तरीकरण और सांप्रदायिक सीमाओं की रक्षा भी की (सिंह 4-6)।

19वीं और 20वीं शताब्दी के आरंभिक युग में राजनीतिक शक्ति/प्रभावकारी कारक के रूप में सनातन धर्म के आदर्श:

1857 के विद्रोह के बाद, एक सुधारवादी हिंदू आंदोलन, विशेष रूप से आर्य समाज, सांप्रदायिक और सरकारी स्वीकृति के माध्यम के रूप में, हरियाणा सहित उत्तरी भारत के वैचारिक भावनाओं को और मजबूत किया। आर्य समाज, जो सनातन धर्म के नेतृत्व में वैदिक पुनरुत्थानवाद का एक अंग है, जो सबसे पहले जातिगत कठोरता, सती प्रथा, अकेलेपन का समाधान किया और महिला शिक्षा और तर्कसंगत आध्यात्मिकता को बढ़ावा दिया (पूर्वावलोकन 3-16)। हालाँकि, यह हठधर्मी रूढ़िवादिता की ओर मुड़ रहा है और हरियाणा में जाति-आधारित आर्य गुट के साथ अपने ही सार्वभौमिक आदर्श को कमजोर कर रहा है। ग्रामीण जाटों द्वारा समर्थित यह आंदोलन, फिर भी, जातियों के बीच सेतु के बजाय एक सांप्रदायिक विखंडन के घटक के रूप में कार्य करता है, और किसानों के अध्ययन और लामबंदी के माध्यम से नैतिक और सरकारी एकजुटता को सुदृढ़ करने के साधन के रूप में कार्य नहीं करता है।

यूनाइटेड किंगडम और उच्च कृषक वर्ग द्वारा 1923 में स्थापित यूनियनिस्ट पार्टी में ग्रामीण हिंदू जमींदार, मुस्लिम जमींदार और एक औपनिवेशिक सरकार शामिल थी। मुख्यतः यह गुट सर छोटू राम के जातिगत रूढ़िवादी, रक्षा भर्ती और किसान-समर्थक वाक्पटुता का लाभ उठाते हैं, हालाँकि कुछ स्वर्णिम नियमों जैसे सुझाव के माध्यम से किसानों और मजदूरों को हाशिए में रखा गया गया जिससे धनाढ्य किसानों और जमींदारों को फायदा पहुँचाया गया है (भारद्वाज)। 1940 के दशक तक, युद्धकालीन आर्थिक गिरावट, कांग्रेस की लामबंदी और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण ने मौजूदा सामाजिक गठबंधन को तोड़ दिया – मुसलमान इस्लामी गठबंधन में विश्वास करने वालों में शामिल हो गए, और हिंदू कृषक कांग्रेस में शामिल हो गए – जिससे 1946 में यूनियनिस्ट पार्टी का दूसरा पतन हुआ (चहल 3-4)।

स्वतंत्रता-पूर्व भारत में चरमपंथी राजनीतिक ताकतों और सांप्रदायिक तनाव के कारकों के रूप में सनातन धर्म के आदर्शों का विकास:

अंग्रेजी कानून ने सांप्रदायिक विभाजन को और गहरा किया, आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के सामाजिक-धार्मिक संशोधन प्रस्ताव को 19वीं सदी के उत्तरार्ध और 20वीं सदी के आरंभ में भारत में धार्मिक पहचान का राजनीतिकरण करने के लिए राजनीतिक माध्यमों में बदल दिया। वैदिक धर्म, हिंदू गौरव और शुद्धि के पुनरुत्थान पर आर्य समाज का ध्यान ईसाइयों और मुसलमानों के साथ संघर्षों को तीव्र कर रहा है, जो औपनिवेशिक जनगणना और धर्म से संबंधित सरकारी परिवर्तनों से और भी बढ़ गया है। स्वामी श्रद्धानंद का सुधारक से हिंदू महासभा के संस्थापक के रूप में परिवर्तन, वह निर्णायक मोड़ था जहाँ धार्मिक परिवर्तन हिंदू धर्म की सुरक्षा के लिए सार्वजनिक कार्रवाई में परिपक्व हुआ। कुछ ऐतिहासिक उदाहरण नीचे दिए गए हैं:

परिदृश्य 1: स्वामी श्रद्धानंद और पंजाब और हरियाणा में हिंदू पहचान का राजनीतिकरण

आर्य समाज सुधारवाद के आधार पर, स्वामी श्रद्धानंद ने तर्क दिया कि कांग्रेस इस्लामी प्रथाओं का समर्थन कर रही है, जैसे हिंदू प्रार्थनाओं (दास) का दमन। मदन मोहन मालवीय के साथ मिलकर, उन्होंने कांग्रेस द्वारा किए गए प्रतिनिधित्व के दावों का विरोध करने के लिए 1915 में हिंदू महासभा की स्थापना की। उनके नेतृत्व में आर्य समाज पार्टी के नेतृत्व ने देशभक्ति का रुख अपनाया, क्योंकि वे सुधारक से राष्ट्रवादी बन गए और हिंदू पहचान को राजनीति में लाए।

परिदृश्य 2: हिंदू महासभा: पंजाब (हरियाणा सहित) में सनातन धर्म की संगठित राजनीतिक इकाई

लाला लाजपत राय की पंजाब हिंदू सभा (1906) से निकली हिंदू महासभा ने 1908–09 तक पंजाब–हरियाणा की राजनीति में सनातन धर्म की स्थिति को औपचारिक रूप दे दिया। 1913 में, मध्यम वर्ग के अखिल भारतीय हिंदू महासभा के सदस्य ब्रिटिश सरकार द्वारा मुस्लिम–हिंदू संबंधों को लेकर किए जा रहे व्यवहार को लेकर सशंकित थे (सिंह)। इतिहासकार इंद्र प्रकाश और कृष्ण के अनुसार, पंजाब में इस हिंदू राजनीतिक आंदोलन की उत्पत्ति उन्नीसवीं सदी के सुधारवादी सनातनवादी आंदोलनों, खासकर शहरी आर्य समाजियों के बीच, से जुड़ी है।

परिदृश्य 3: पंजाब (हरियाणा सहित) में सांप्रदायिक कट्टरता को बढ़ावा देने वाले सनातन धर्म के सिद्धांत

1922 तक हिंदू महासभा ने हिंदू त्योहारों, गोरक्षा, शुद्धि और संगठन जैसे मुद्दों को बढ़ावा दिया, जिससे उत्तर प्रदेश और पंजाब में अंतर्धार्मिक तनाव और बढ़ गया। हेडगेवार के अनुसार, उनका यह विश्वास कि मुसलमान पहले मुसलमान हैं... फिर 1923 से 1926 तक मुस्लिम–विरोधी भावनाओं को और भड़काने का ही काम करता रहा। ऐसे बयानों और कार्यों (बैलेंटाइन, जहूर और गुज्जर) से समुदायों के बीच मतभेद और बढ़ गए, जिसने उस असंतोष का मार्ग प्रशस्त किया जिसके कारण बाद में भारत का विभाजन हुआ।

परिदृश्य 4: पंजाब (हरियाणा सहित) में हिंदू–सिख पहचान संघर्षों पर सनातन धर्म का प्रभाव

जिन इलाकों में हिंदू और सिख एक साथ रहते हैं, वहाँ तनाव इसलिए पैदा हुआ क्योंकि अखबार–ए–आम और सनातन धर्म गजट जैसी सनातनवादी पत्रिकाओं ने सिखों को हिंदू धर्म का एक संप्रदाय बताकर गलत तरीके से चित्रित किया। 1905 में सांप्रदायिक संघर्ष तब शुरू हुआ जब सनातनवादियों ने अमृतसर के पवित्र सरोवर के पास मूर्ति पूजा को उचित ठहराया। बैलेंटाइन और फाल के अनुसार, भाई काहन सिंह नाभा ने 1897 में अपनी रचना "हम हिंदू नहीं" में सिख राजनीतिक पहचान पर जोर देकर और धार्मिक मेलजोल को अस्वीकार करके इन दावों का खंडन किया। बाद में पंजाब और हरियाणा का विभाजन इन्हीं संघर्षों से प्रभावित हुआ, जिसने दोनों राज्यों को और विभाजित कर दिया।

परिदृश्य 5: *औपनिवेशिक पंजाब–हरियाणा में सांप्रदायिक विखंडन: कृषि राजनीति, आर्य समाज और हिंदू–मुस्लिम एकता का द्रास*

औपनिवेशिक पंजाब—हरियाणा के कृषि अभिजात वर्ग के बीच, आर्य समाज ने वैदिक पुनरुत्थानवाद के माध्यम से हिंदू जातिगत पहचान को बढ़ावा दिया, जिसने धर्मांतरण और गोरक्षा के माध्यम से मुसलमानों को अलग—थलग कर दिया। सांप्रदायिक जनगणना, पृथक निर्वाचक मंडल और रूवीकरणकारी संरक्षण जैसी ब्रिटिश नीतियों ने इस खाई को और चौड़ा कर दिया। 1940 के दशक में, कभी मजबूत रही कृषि एकता टूटने लगी क्योंकि हिंदू अभिजात वर्ग कांग्रेस के साथ और मुसलमान लीग के साथ खड़े हो गए। आर्थिक असमानता, धार्मिक राजनीति और औपनिवेशिक शासन (डार, सिंह) के संगम ने विभाजन की क्रूरता में योगदान दिया।

समकालीन हरियाणा के क्षेत्रीय राजनीतिक मामलों में 19वीं सदी के हरियाणा के सनातन धर्म आधारित सामाजिक—धार्मिक आदर्शों के निशान और विरासत

19वीं—20वीं सदी के सनातन धर्म आदर्शों की विरासत के रूप में समकालीन हरियाणा में हिंदुत्व और इसकी राजनीतिक

भूमिका:

आजादी के बाद, हरियाणा में हिंदुत्व की राजनीति में सनातन धर्म के सुधार मानकों से लेकर आर्य समाज, हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं भारत के पुनरुत्थानवादी एजेंडे तक का बदलाव आया। 1951 में स्थापित भारतीय जनसंघ और बाद में पंजाबी सूबा आंदोलन की जातीय—भाषाई राजनीति से प्रभावित भाजपा ने इस वैचारिक परिवर्तन को राजनीतिक गति दी (काजी)। जनसंघ के नेतृत्व में और आर्य समाज से दृढ़ता से जुड़े शहरी हिंदू, अकाली दल के पंजाबी घोषणापत्र के प्रयास का विरोध करते हैं और सिखों के पाला बदलने से डरते हैं (पुनिया)। 1966 में, पंजाब के भाषाई विभाजन ने हरियाणा को हिंदू बहुल राज्य बना दिया, जिसने एक विशिष्ट हिंदुत्व आख्यान के लिए उपजाऊ जमीन तैयार की (सिंह)। जैसे अपने प्रारंभिक काल में जनसंघ का प्रभुत्व शहरों में देखा गया, जहाँ ऊँचे वर्गों के बनिये, ब्राह्मण और अरोड़ा, खत्री आदि जिनमें परंपरागत मूर्ति—पूजा से असहमति थी—फिर भी प्रभावित हुए; वैसे ही आज डेरा संगठनों पर जनमत विभेद के बावजूद प्रभाव देखा जा सकता है (कुमार)।

आरएसएस आर्य समाज के अनुरूपता के लिए प्रयास करता रहा, हालाँकि झज्जर में गोलवलकर जैसे शिक्षकों द्वारा की गई असामयिक पहलों का कोई खास नतीजा नहीं निकला। 2014 के बाद, भाजपा काफी तेजी से बढ़ी, उसने संघीय चुनावों में जीत हासिल की और ग्रामीण आर्य समाजियों को वापस अपने पाले में किया (दत्ता)। यह लगभग एक हिस्सा गौ रक्षा (त्यागी) जैसे मुद्दों को लामबंद करके और प्रभावशाली आर्य समाजी हस्तियों, विशेष रूप से आचार्य देव व्रत, को शामिल करके हासिल किया गया, जिन्हें मोदी के हरियाणा भाजपा सचिव (राजस्थान) के कार्यकाल के दौरान राजनीतिक रूप से एकीकृत किया गया था। इसका परिणाम आरएसएस—भाजपा प्रणालियों में आर्य समाज का गहन एकीकरण था, जिसने हरियाणा के हिंदू जनसांख्यिकी में हिंदुत्व समर्थक और उग्र राष्ट्रवादी भावना का प्रसार किया, हालाँकि टिप्पणीकार अग्निवेश की इस घटनाक्रम की प्रशंसा करते हैं कि यह राजनीतिक उद्देश्यों के लिए आर्य समाज संगठनों के मुख्य क्षेत्र की आलोचना करता है (पुनिया)।

डेरा और दलित राजनीति का उदय — समकालीन हरियाणा की एक हिंदुत्व विरोधी क्षेत्रीय शक्ति:

हरियाणा की आबादी का लगभग 20% हिस्सा होने के बावजूद, हरियाणा के दलितों को जाति-आधारित हिंदुत्व विचारधारा का समर्थन करने वाले शक्तिशाली जाट जमींदारों द्वारा आर्थिक और राजनीतिक रूप से हाशिए पर रखा गया है। कोटा नियमों और अपर्याप्त एकीकरण नेतृत्व से प्रभावित आंतरिक मतभेद, राजनीतिक ताकत को और सीमित करते हैं दलितों को बजटीय असुरक्षा, नागरिक प्रतिनिधित्व में कमी, न्यूनतम संस्थागत पहुँच और खाप पंचायतों के प्रतिरोध का भी सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, डेरा सचखंड बल्लां, जो आद धर्म और गुरु रविदास की शिक्षाओं से संबद्ध है, एक ऐसा डेरा है जो दलितों पर केंद्रित है और वर्गहीनता, सामुदायिक एकजुटता और सामाजिक दृढ़ता को बढ़ावा देकर हिंदुत्व एकीकरण और जातिगत पदानुक्रम के खिलाफ सक्रिय रूप से लड़ता है (कुमार; सिंह और राम)।

निष्कर्ष और भविष्य का दायरा

सनातन धर्म सभा और आर्य समाज उन्नीसवीं सदी में रूढ़िवादी हिंदू राजनीतिक समूह थे, और यह शोध हिंदुओं, सिखों और मुसलमानों के बीच कट्टर धार्मिक पहचान को बढ़ावा देने के साथ-साथ उनकी प्रमुखता में वृद्धि का अनुसरण करता है। हिंदू महासभा के माध्यम से, वे उग्र राष्ट्रवाद से जुड़े थे उन्होंने आरएसएस, जनसंघ और भाजपा को आर्थिक सहारा दी और, ब्रिटिश नीति के परिणामस्वरूप, ये दो संगठन जातिगत स्तरीकरण, दलित समुदाय के हाशियाकरण और धार्मिक विभाजन को प्रभावित किया। यह विरासत हाल के हरियाणा की जाति-आधारित राजनीति में व्याप्त है, जिसमें जाट वंशवाद, अंतर्जातीय प्रतिस्पर्धा और 19वीं सदी के आदर्शों पर आधारित हिंदू-सिख सरकार का निरंतर विभाजन शामिल है। अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर हैं:

प्रश्न 1: क्या आर्य समाज और सनातन धर्म सभा की सामाजिक-धार्मिक पहलों की प्रतिक्रियाओं की व्याख्या स्वतंत्रता-पूर्व पंजाब प्रांत (जिसमें हरियाणा भी एक क्षेत्र के रूप में शामिल है) और हरियाणा राज्य में घटित क्षेत्रीय राजनीतिक घटनाओं/तनावों/विकास के कारकों के रूप में की जा सकती है?

आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के सामाजिक-धार्मिक आदर्शों ने समकालीन हरियाणा सहित औपनिवेशिक पंजाब में हिंदू पहचान को राजनीतिक रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदू महासभा का उपयोग करते हुए आर्य समाज के सुधारवादी कार्य ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उदय को आकार दिया और क्षेत्रीय राजनीति में हिंदुत्व की राजनीति को स्थापित किया। सनातनी रूढ़िवाद, अंततः एक राजनीतिक शक्ति में बदला तथा धर्मप्रचार के माध्यम से हिंदू-मुस्लिम और हिंदू-सिख विभाजन को और गहरा करता है। ब्रिटिश सांप्रदायिक दिशानिर्देशों द्वारा समर्थित यह आंदोलन उग्रवाद, पहचान-आधारित विखंडन और जातिगत पदानुक्रम को बढ़ावा देता है, जिसने स्वतंत्रता के बाद हरियाणा में जाटों के पाले में आने और दलितों के हाशिए पर जाने के परिदृश्य को आकार दिया।

प्रश्न 2: हरियाणा (औपनिवेशिक काल में पंजाब प्रांत में शामिल) में सक्रिय दो सनातन धर्म आधारित 19वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों, आर्य समाज और सनातन धर्म सभा की विरासत समकालीन हरियाणा के राजनीतिक मामलों में किस प्रकार प्रदर्शित होती है?

आर्य समाज की विरासत, हिंदुत्ववादी ताकतों के साथ अपने जुड़ाव के माध्यम से, आरएसएस और भाजपा की प्रशंसा करती है और हरियाणा में जातिगत और नागरिक संबंधों को प्रभावित करती है। जैसा कि जाट कृषि राजनीति और उच्च जाति का शहरी हिंदुत्व आर्य आदर्श को दर्शाता है, डेरा सचखंड बल्लां जैसे दलित नेतृत्व वाले डेरे गुरु रविदास के समतावाद को प्रोत्साहित करके अपनी वर्तमान गति-प्रकृति व्यक्त कर रहे हैं। ये धार्मिक आयोजन इस क्षेत्र में आर्य-मूलक हिंदू धर्म के विरुद्ध एक मजबूत प्रति-कथा रचते हैं।

इसका आधारभूत विश्लेषण 19वीं शताब्दी के दौरान सनातन धर्म के आंदोलन, उनकी 20वीं सदी की सत्ता की घोषणा और हरियाणा में उनकी निरंतर उपस्थिति का अनुसरण करता है, तथा दिखाता है कि किस प्रकार ऐतिहासिक महत्व के लोगों ने नई विशिष्टता, सत्ता और पड़ोस परियोजनाओं की योजना बनाई।

संदर्भ

1. बैक्सस, लियोनेल। डेरा सच्चा सौदा विवाद और उससे आगे। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खंड 42, अंक 40, जनवरी 2007, पृष्ठ 4059-4065। JSTOR, <https://doi.org/10.2307/40276649>..
2. बैलेंटाइन, टोनी। "पीछे मुड़कर देखना, आगे देखना . सिख धर्म का इतिहासलेखन।" न्यूजीलैंड जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज, खंड 4, अंक 1, जून 2002, पृष्ठ 5-29।
3. भारद्वाज, धर्मवीर। "दक्षिण-पूर्वी पंजाब में पुनरुत्थानवादी आंदोलन और मुस्लिम सांप्रदायिकता।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेशन एंड रिसर्च एनालिसिस (आईजेआईआरए), खंड 1, अंक 3, अक्टूबर-दिसंबर 2021, पृष्ठ 108-111। आईएसएसएन 2583-0295।
4. भारद्वाज, सूरज भान। "औपनिवेशिक हरियाणा में आर्थिक परिवर्तन और उनका सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव, 1857-1947।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिव्यूज एंड रिसर्च इन सोशल साइंसेज, खंड 5, अंक 2, 2017, पृष्ठ 121-131। आईएसएसएन 2347-5145।
5. ब्यूंगमिन, ए.एन. "औपनिवेशिक पंजाब में सामाजिक परिवर्तन और विकास पर जमीनी और प्रांतीय दृष्टिकोण।" एसएसआरएन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल, 2018, <https://doi.org/10.2139/ssrn.3284776>. 1 मई 2021 को अभिगमित।

6. चहल, मनदीप। "ब्रिटिश दृष्टिकोण और नीतियों में आर्य समाज की भूमिका।" जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, खंड 10, अंक 19, जुलाई 2015, पृष्ठ 1-2। आईएसएसएन 2230-7540।
7. चौधरी, प्रेम। "जीवनी इतिहास के रूप में . औपनिवेशिक दक्षिण-पूर्वी पंजाब में सामाजिक परिवर्तन।" जर्नल ऑफ पंजाब स्टडीज, खंड 24, संख्या 1-2, 2017, पृष्ठ 5-15।
8. साइनर, मैग्डलेना। 1947 के बाद सिख समाज में सार्वजनिक भावना का कट्टरपंथीकरण। एनाल्स यूनिवर्सिटीस मारिया क्यूरी-स्कूलोडोव्स्का, सेक्टियो के - पोलिटोलोगिया, वॉल्यूम। 2019, पृ. 53, <https://doi.org/10.17951/k.2018.25.2.53-65>. Accessed 23 Sept. 2022. 53-65. 23 सितंबर 2022 को एक्सेस किया गया।
9. डार, हिलाल अहमद और मुनेंद्र सिंह। "मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा और भारत का विभाजन।" मैन इन इंडिया, खंड 96, अंक 4, 2016, पृष्ठ 995-1009। सीरियल्स पब्लिकेशन्स।
10. दास, तपन कुमार। "स्वामी श्रद्धानंद और 1920 के दशक में हिंदू चेतना जागृत करने में उनकी भूमिका।" वर्ल्ड वाइड जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट (JMRD), खंड 3, अंक 8, 2017, पृष्ठ 66-68। www.wwjmr.com. 2454-6615.
11. देओल, हरनिक। भारत में धर्म और राष्ट्रवाद . पंजाब का मामला, 1960-1990। पीएचडी शोध प्रबंध, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, 1996। प्रोक्वेस्ट एलएलसी, 2014। यूएमआई संख्या 093328।
12. जोधका, सुरिंदर एस. गाँव में क्या हो रहा है . हरियाणा में ग्रामीण जीवन और कृषि परिवर्तन का पुनरावलोकन। सीएस वर्किंग पेपर सीरीज, सीएस/डब्ल्यूपी4-1, सामाजिक व्यवस्था अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, जनवरी 2014, पृष्ठ 1-3।
13. जोधका, सुरिंदर एस., और मुरली धर। "गाय, जाति और सांप्रदायिक राजनीति . झज्जर में दलित हत्याएँ।" इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खंड 38, अंक 3, 18 जनवरी 2003, पृष्ठ 171-173।
14. जोन्स, केनेथ डब्ल्यू. ब्रिटिश भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन। गॉर्डन जॉनसन द्वारा संपादित, श्रृंखला संपादक . सीए बेली और जॉन एफ. रिचर्ड्स, द न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008। कैम्ब्रिज हिस्ट्रीज ऑनलाइन।
15. जोश, बागवान। विभाजन और समकालीन भारत में हिंदुत्व आंदोलन का उदय। रेविस्टा कैनारिया डी एस्टुडिओस इंगलिसेस। 76, 2018, पीपी. 175-195, <https://doi.org/10.25145/j.recaesin>. 2018.76.13. 2 मई 2020 को एक्सेस किया गया।
16. जोशी, गिरिजा। वंश की राजनीति . कृषि सीमांत क्षेत्र में जाति, नातेदारी और भूमि नियंत्रण। साउथ एशिया मल्टीडिसिप्लिनरी एकेडमिक जर्नल, अंक 21, 10 सितंबर 2019, <https://doi.org/10.4000/samaj.5638>. 15 दिसंबर 2019 को अभिगमित।
17. कौर, गुरजीत। "हरियाणा में क्षेत्रीय राजनीतिक दल . एक विश्लेषण।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नॉवेल रिसर्च एंड डेवलपमेंट (आईजेएनआरडी), खंड 9, अंक 1, जनवरी 2024, लेख आईडी: आईजेएनआरडी2401339, पृष्ठ 1-3।
18. कौर, सुखदीप. "19वीं सदी के पंजाब में विविधता, बहुलवादी प्रथाएँ और धार्मिक पहचान।", खंड 28, मई 2016.
19. कृष्ण। "हरियाणा में आर्य समाज की भूमिका का अध्ययन।" जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, खंड 16, अंक 6, मई 2019। आईएसएसएन 2230-7540। 10-53111/ea-v58i3-1111A

20. कुमार, दिनेश। "हरियाणा की गठबंधन राजनीति का इतिहास: एक अध्ययन।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंटेम्परेरी रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी (आईजेसीआरएम), खंड 3, अंक 4, जुलाई-अगस्त 2024, पृष्ठ 77-80। आईएसएसएन 2583-7397।
21. कुमार, रविंदर और महेंद्र सिंह। "हरियाणा में दलितों में सामाजिक-धार्मिक और राजनीतिक गतिशीलता की स्थिति।" रेस मिलिटेरिस, खंड 13, अंक 4, वसंत 2023, आईएसएसएन 2265-6294।
22. लुटगेंडोर्फ, फिलिप. एक पाठ का जीवन: तुलसीदास के रामचरितमानस का प्रदर्शन. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1991. <http://ark.cdlib.org/ark:/13030/ft796nb4pk/>
23. मेहता, नीरव। आंतरिक क्रांति शुद्धि और हिंदू धर्म का पुनर्निर्माण। स्वार्थमोर अंडरग्रेजुएट हिस्ट्री जर्नल, खंड 1, अंक 1, 2020, पृष्ठ 4-36, <https://doi.org/10.24968/2693-244x.1.1.1>। 6 दिसंबर 2024 को अभिगमित।
24. पॉल, शीना। "सिख पहचान पर बहस: सिख पहचान के मुद्दे—सनातनवादी-सिख बहस।" जर्नल ऑफ पंजाब स्टडीज (जेपीएस), खंड 20, अंक 1-2, 2016।
25. प्रायर, कैथरीन। उत्तर भारत में हिंदू धर्म का ब्रिटिश प्रशासन, 1780-1900। पीएचडी शोध प्रबंध, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, सेंट कैथरीन कॉलेज, 1990। पृष्ठ 3-16।
26. पुनिया, मनदीप। "आर्य समाज को अपने में समाहित करने का आरएसएस का प्रयास फलीभूत हो रहा है।" caravanmagazine.in/politics/rss-attempt-takeover-arya-samaj-english .
27. पुष्पा। "स्वतंत्रता काल में हरियाणा में जाटों के रीति-रिवाज और सामाजिक-राजनीतिक नियंत्रण।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एंड करंट रिसर्च, खंड 5, जनवरी-फरवरी 2017। स्वीकृत तिथि 3 फरवरी 2017, ऑनलाइन उपलब्ध तिथि 26 फरवरी 2017। आईएसएसएन 2321-3124।
28. काजी, उमैर इमरान। भारत में हिंदुत्व का उदय और भारतीय लोकतांत्रिक परियोजना पर इसका प्रभाव। मास्टर थीसिस, कैनेडियन फोर्सेज कॉलेज, जेसीएसपी 49, 2022दृ2023।
29. राज, रूप। "भाजपा और आरएसएस — एक सामाजिक संगठन के संबंध में एक राजनीतिक शक्ति का विकास।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैकेनिकल इंजीनियरिंग, खंड 6, विशेषांक, नवंबर-दिसंबर 2021, पृष्ठ 2-7।
30. राम, रंकी। "डेरों, सामाजिक पूँजी और संघर्ष संरचना का अंतर्संबंध: एक आदर्श के रूप में डेरा सच्चा सौदा।" डेरे, सामाजिक पूँजी और संघर्ष, खंड 31, मई 2017।
31. रानी, निशा। ब्रिटिश शासन के दौरान पंजाब में सामाजिक परिवर्तन (1849-1900). एम.फिल. शोध प्रबंध, गुरु काशी विश्वविद्यालय, 2018, पृ. 50-60.
32. स्कॉट, जे. बार्टन। आर्य अनबाउंड प्रिंट हिंदू धर्म और धार्मिक अपराध का सांस्कृतिक नियमन। दक्षिण एशिया, अफ्रीका और मध्य पूर्व का तुलनात्मक अध्ययन, खंड 35, संख्या 2, 2015, पृष्ठ 294.309, <https://doi.org/10.1215/1089201x-3139072>। 19 अक्टूबर 2021 को अभिगमित।
33. सिद्धू, सुमैल सिंह. पंजाब में सिख पहचान की विवादास्पद दृष्टि . 1800-1930. पीएचडी शोध प्रबंध, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2007.
34. सिंह, अधिराज, और डॉ. अन्ना नाथ गांगुली। "हरियाणा में क्षेत्रीय और वंशवादी राजनीति और मतदान व्यवहार और लोकतांत्रिक घाटे की जाँच।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (आईजेसीआरटी), खंड 13, अंक 3, मार्च 2025, पृष्ठ 1-2। आईएसएसएन 2320-2882।
35. सिंह, भजन। "हरियाणा में भारतीय राष्ट्रवाद का उदय (1900-1919)।" पूर्व मीमांसा . एक बहु-विषयक द्विवार्षिक शोध पत्रिका, खंड 9, अंक 1-2, मार्च-सितंबर 2018, पृष्ठ 1-8। आईएसएसएन 0976-0237।

36. सिंह, मेहर। "हरियाणा के धार्मिक क्षेत्रों का निर्माण।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेज, खंड 11, संख्या 12, दिसंबर 2022, पृष्ठ 2-7।
37. सिंह, पशौरा। "सिख राजनीति में धर्म-राजनीति विभाजन से कैसे बचा जाए।" धर्म, खंड 10, अंक 5, 28 अप्रैल 2019, पृष्ठ 296, <https://doi.org/10.3390/rel10050296>।
38. सिंह, सुबे। "पंजाब की राजनीति में हिंदू महासभा: हिंदुत्व पहचान का दावा 1945-47।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक डेवलपमेंट एंड रिसर्च (आईजेएसडीआर), खंड 4, अंक 7, जुलाई 2019, पृष्ठ 465-468। आईएसएसएन 2455-2631।
39. जहूर, मुहम्मद अबरार, और मुनीर गुज्जर। पंजाब में उपनिवेशवाद और धार्मिक पहचान का निर्माण: मुसलमानों का मामला। जर्नल ऑफ हिस्ट्री कल्चर एंड आर्ट रिसर्च, खंड 8, संख्या 4, 22 दिसंबर 2019, पृष्ठ 56, <https://doi.org/10.7596/taksad.v8i4.2004>. 13 जनवरी 2020 को अभिगमित।